TARGET with Alok

विद्यार्थी नहीं प्रशासक बनिए

An Online Institute for Civil Services

भारतीय इतिहास

(INDIAN HISTORY)

— By Satyam Tripathi

Call us :	Whatsapp
9721026382	9721026382
9717413295	9717413295
9170509670	9170509670
9170509671	9170509671
9670365889	9670365889
8736093317	8736093317
7860949547	7860949547
7388655387	7388655387
7880947856	7880947856
6389318812	6389318812
7081865829	7081865829
9918100665	9918100665

Director –

Alok Singh

Email. targetwithalokias@gmail.com

प्रागैतिहासिक काल

इतिहास का यह काल खण्ड जिसमे लिपि का ज्ञान नही था प्रागैतिहासिक काल कहा जाता है। भारतीय प्रागैतिहासिक काल कहा जाता है। भारतीय संदर्भों मे डॉ. प्रिमरोग ने 1824 में कर्नाटक के राय चूर जिले में लिंगासुर में प्रागैतिहासिक औजारों की खोज की, 1853 में जान इवांस ने नर्मदा के किनारे जबलपुर में प्रस्तर औजारों की चर्चा की। 1863 में रॉबर्ट ब्रुसफट ने चेन्नई के समीप पल्लवरभ में विस्तृत एवं व्यवस्थिता अन्वेषण किया।

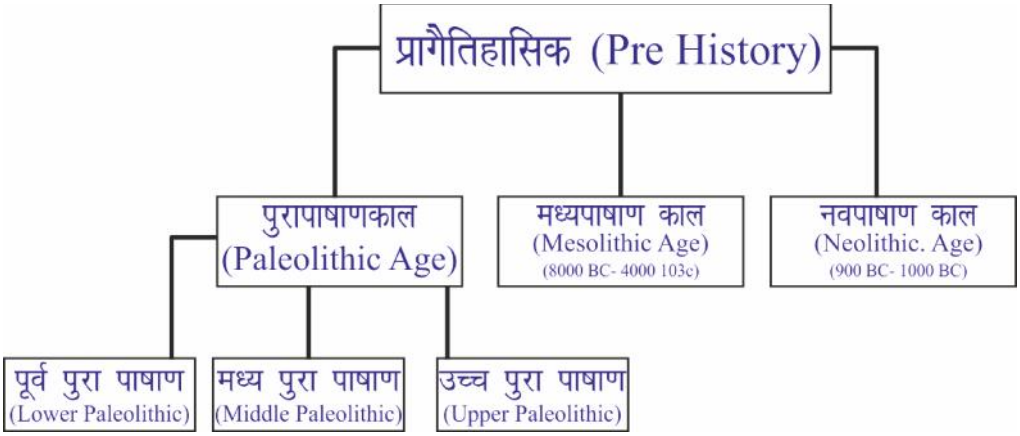

पुरापाषाण कालीन औजार

पूर्वपुरापाषाण काल (Lower Paleolithic Age) क्वाटजिइट के पत्थर

पेबुल

चापर

चापिंग

हैण्डेक्स

स्क्रेपर

मध्यपुरापाषाण काल (Medde Paleolithic Age) क्वाटजिइट के पत्थर

खुरचनी

वेधनी

तक्षणी

उच्च पुरापाषाण (Upper Paleotithic Age)

(i) **ब्लेड** (ii) **स्क्रेपर** (iv) **ब्यूरिन** (v) **हड्डियों के उपकरण, सूई**

Call us : 9721026382, 9717413295, 9170509670, 9170509671, 9670365889, 8736093317, 7860949547, 7388655387, 7880947856, 6389318812, 7081865829, 9918100665

Whatsapp us : 9721026382, 9717413295, 9170509670, 9170509671, 9670365889, 8736093317, 7860949547, 7388655387, 7880947856, 6389318812, 7081865829, 9918100665

मध्यपाषाण (Mesalithic Age)

(i) **ब्लेड**

(ii) **क्रोड**

(iii) **नुकीला औजार**

(iv) **त्रिकोण**

(v) **नवचंद्राकार**

(vi) **समलम्ब**

नवपाषाण कालीन औजार (Neolithic Tools)

नवपाषाण कालीन औजार (Neolithic Tools)

1. हड्डी के औजार 2. धनुष/ भाला 3. परम्परागत उपकरण छोटे एवं पालिश किए हुए।

पुरापाषाण कालीन स्थलों का सर्वेक्षण (Survey to paleolithic sights)

निम्न पुरापाषाण :-

क्षेत्र/स्थल	**विशिष्ट पहलू**
कश्मीर घाटी पहलगाम (लिद्रव्य नदी)	पहलगाम से हैण्ड एक्स मिला है।
पोतवाल क्षेत्र सोहन घाटी में आडियानसय, बलवाल चौतेरा	हस्त कुछार एवं अन्य औजार मिले हैं।
राजस्थान क्षेत्र (लुनी नदी) बागौर, डिडवाना 16 R, सिंगी तलाब	पुरापाषाण कालीन औजार मिले हैं।
गुजरात क्षेत्र काही नदी घाटी भद्रर नदी	हस्तकुठार, खुरचनी आदि मिले हैं।
मध्य प्रदेश नर्मदा घाटी हथनौरा भीमवेटका आदमगढ़ गुफाओं में मानव निवास चित्रकला के साक्ष्य मिले हैं।	हथनौरा से प्राचीनतम मानव खोपड़ी के साक्ष्य प्राप्त हुए है।
उत्तर प्रदेश बेलन घाटी- लोहंदा नाला	 मातृदेवी की हारपून मिली है। पुरापाषाण कालीन औजार के साक्ष्य मिले हैं।
महाराष्ट्र चिरकी/नेवासा/कोरेगांव उड़ीसा	 निम्न पुरापाषाण काल के साक्ष्य मिले हैं।
मयूर भंज-महानदी घाटी	पुरापाषाण कालीन औजार के साक्ष्य मिले हैं।

Log in. targetwithalok.in for
General Studies and Current Affairs Notes

तमिलनाडु पल्लवरम	सर्वप्रथम 1863 में रावर्ट ब्रुस फुट ने हैण्ड एक्स प्राप्त किया।
आर्तरमपक्कम	पूर्णपाषाण कालीन उपकरण मिला।
गुड्डियम	कोर्तलयार नदी घाटी में स्थित हैण्ड एक्स
कर्नाटक अनागवाडी	पुरापाषाण कालीन उपकरण मिले हैं।
वागलपुर	पुरापाषाण कालीन उपकरण मिले हैं।
हुसगी	पुरापाषाण कालीन उपकरण मिले हैं।

मध्य पुरापाषाण काल -(Middle Mesolithic Age)	
राजस्थान	
लूनी नदी	मध्य पुरापाषाण कालीन औजार प्राप्त हुए है।
घाटी	मध्य पुरापाषाण कालीन औजार प्राप्त हुए है।
वरिधानी	मध्य पुरापाषाण कालीन औजार प्राप्त हुए है।
मोंगरा	मध्य पुरापाषाण कालीन औजार प्राप्त हुए है।
बेरोच	मध्य पुरापाषाण कालीन औजार प्राप्त हुए है।
महाराष्ट्र नेवासा	नेवासा से प्राप्त उपकरण उच्च स्तरीय हैं, इसलिए इसे नेवासियन कल्चर कहा गया।
चिरकी	नेवासा से प्राप्त उपकरण उच्च स्तरीय हैं, इसलिए इसे नेवासियन कल्चर कहा गया।
बिहार सिंहभूम	मध्यपुरापाषाण कालीन उपकरण हुए है।
पलामू	मध्यपुरापाषाण कालीन उपकरण हुए है।
उत्तर प्रदेश चकिया	मध्य पुरा पाषाण कालीन उपकरण प्राप्त हुए है।
सिंगरौली (मिर्जापुर)	मध्य पुरा पाषाण कालीन उपकरण प्राप्त हुए है।
मध्य प्रदेश भीम वेटका	मध्य पुरा पाषाण कालीन उपकरण प्राप्त हुयें है। चित्रकला के साक्ष्य भी प्राप्त हुए है।
गुजरात (सौराष्ट्र)	मध्यपुरा पाषाण कालीन उपकरण प्राप्त हुए है।
हिमांचल	मध्यपुरा पाषाण कालीन उपकरण प्राप्त हुए है।

उच्च पुरापाषाण काल (Upper Mesolethic age)	
संघाव गुफा (अफगानिस्तान)	उच्च पुरा पाषाण कालीन औजार प्राप्त हुए है।
रिवात (पाकिस्तान)	उच्च पुरा पाषाण कालीन औजार प्राप्त हुए है।
राजस्थान बूढ़ा पुष्कर	उच्च पुरा पाषाण कालीन प्राप्त हुए है।
बेलन घाटी(चोपानी मांडो)	उत्तर पुरा पाषाण काल से नव पाषाण काल तक निरंतरता प्राप्त हुए है।
उत्तर प्रदेश चोपानीमाण्डे	उत्तर पुरापाषाण काल से नव पाषाण काल तक सातत्य मिल है। पशु हड्डियों का जीवाश्म भी प्राप्त हुए है।

TARGET with Alok

Call us : 9721026382 9717413295 9170509670 9170509671 9670365889 8736093317 7860949547 7388655387 7880947856 6389318812 7081865829 9918100665
Whatsapp us : 9721026382 9717413295 9170509670 9170509671 9670365889 8736093317 7860949547 7388655387 7880947856 6389318812 7081865829 9918100665

मध्य पाषाण काल (Mesolithic Age)	
राजस्थान क्षेत्र	
तिलबाड़ा	चाक पर बने उपकरण मिली है।
नागौर	भारत का सबसे बड़ा माध्य पाषाण कालीन स्थल। पशुपालन प्रारंभ हो चुका था। मानव कंकाल, झोपड़ी के साक्ष्य, छल्लों के साक्ष्य प्राप्त हुए है।
गुजरात	
लघनांज	– यहाँ से 14 नरकंकाल प्राप्त हुए हैं। इसके अतिरिक्त सूक्ष्म पाषाणकालीन उपकरण प्राप्त हुए है।
उत्तर प्रदेश	
सरायनहर राय (प्रतापगढ़)	यहाँ से बस्ती के साक्ष्य प्राप्त हुए है, स्तम्भ गर्त के साक्ष्य प्राप्त हुए है, अस्थि तथा सींग निर्मित उपकरण प्राप्त हुए है, सामुदायिक भट्टियों के साक्ष्य प्राप्त हुए है।
महदहा (प्रतापगढ़)	यहाँ से बस्ती तथा स्तंभ गर्त के साक्ष्य प्राप्त हुए है, मृग श्रृंग के छल्लो कें आभूषण प्राप्त हुए है इसके अतिरिक्त युग्म शवाधान के साक्ष्य प्राप्त हुए है।
दमदमा (प्रतापगढ़)	यहाँ से लघुपाषाणकालीन उपकरण मिला है, 41 मानव नरकंकाल मिले हैं इसके अतिरिक्त स्तंभ गर्त एवं गर्त चूल्हे प्राप्त हुए है साथ ही साथ बकरी, बैल, गाय, भैंस, हाथी, गैण्डा एवं सुअर के साक्ष्य मिले हैं।
चोपानी माण्डो (प्रयागराज)	यहाँ से पुरापाषाण काल से लेकरके मध्य पाषाण तक का सातव्य मिलता है, यहीं से मृदभाण्ड बनाने की परंपरा भी ज्ञात होती है।
मोरहना पहाड़ (मिर्जापुर)	मध्य पाषाण कालीन औजार मिले है।
वघही खोर	मध्य पाषाण कालीन औजार मिले है।
लेह खइया	मिर्जापुर क्षेत्र में सर्वाधिक 17 नरकंकाल प्राप्त हुए है।
आंध्र प्रदेश	
बेटंम चोर्ला रेनी गुण्टूर	हड्डियों के औजार एवं मध्य पाषाणकाल के औजार मिले है।
कर्नाटक	
सोरापुर	मध्य पाषाण कालीन औजार मिले है।
जलालहल्ली	मध्य पाषाण कालीन औजार मिले है।
मध्य प्रदेश	
आदमगढ़	मध्य पाषाण कालीन औजार मिले है।
जम्बूद्वीप	मध्य पाषाण कालीन औजार मिले है।
डोरोद्वीप	मध्य पाषाण कालीन औजार मिले है।
भीमवेटका	मध्य पाषाण कालीन औजार मिले है, चित्रकला का भी साक्ष्य मिला है।

TARGET with Alok

Log in. targetwithalok.in for
General Studies and Current Affairs Notes

नव पाषाण काल (Neolithic Age)

उ. प. क्षेत्र

मेहरगढ़ (पाकिस्तान) (बलूचिस्तान की रोटी की टोकरी)	नव पाषाण काल से सैंधव सभ्यता तक हेतिहासिक निरंतरता मिलती हैं। तांबा गलाने के साक्ष्य मिले है। गेहूं एवं जौ की तीन प्रजातियों के साक्ष्य। द्वितीय चरण में कपास का प्राचीनतम साक्ष्य मिलता है। पशुपालन के साक्ष्य मिले है
उत्तरी क्षेत्र	
बुर्जहोम (जम्मू एंड कश्मीर)	गर्त आवास के साक्ष्य प्राप्त हुए है, खेती के प्रारंभ के साक्ष्य मिलते है साथ ही साथ कुत्ते को मालिक के साथ दफनाया गया है।
गुफ्फरकल (जम्मू एंड कश्मीर)	इसका शाब्दिक अर्थ है, कुम्हार की गुफा, यहाँ से गर्त आवास के साक्ष्य के मिले है।
मार्तण्ड (जम्मू एंड कश्मीर)	- यहाँ से भी गर्त आवास के साक्ष्य मिले है।
मध्यवर्ती क्षेत्र	
कोल्डीहवा	धान उगाने का प्राचीनतम साक्ष्य मिला है।
महगड़ा	धान एवं जौ की खेती के साक्ष्य मिला है, पशुबाड़ा के साक्ष्य मिला है। तथा गोलाकार झोपड़ी के साक्ष्य भी मिले है।
चोपानी माण्डो	यहाँ से बर्तन उद्योग के साक्ष्य मिले है।
दक्षिण भारत	
ब्रह्मागिरि	नवपाषाणिक उपकरण मिले है।
उतनूर	नवपाषाणिक उपकरण मिले है।
कोडक्कल	नवपाषाणिक उपकरण मिले है।
संगम कल्लू	नवपाषाणिक उपकरण मिले है।
टीन रशीपुर	नवपाषाणिक उपकरण मिले है।
कुपगल	नवपाषाणिक उपकरण मिले है।
पैय्यम पल्ली	नवपाषाणिक उपकरण मिले है।
नागार्जुनी कोण्डा	नवपाषाणिक उपकरण मिले है।
पलवाय	नवपाषाणिक उपकरण मिले है।
पश्चिमी क्षेत्र राजस्थान	
बालास्थल	यहां से प्राप्त मष्दभाण्ड परम्परा, ताम्र उपकरण का तादात्म्य सैंधव चरण से लगाया जा सकता है।
वागौर	कृषि एवं पशुपालन के साक्ष्य पशुपालन का प्राचीनतम साक्ष्य माना जा सकता है।
गणेश्वर	तांबे का विशाल भंडार, हड़प्पा काल में यहीं से तांबे का निर्यात होता था।

TARGET with Alok

Call us : 9721026382 9717413295 9170509670 9170509671 9670365889 8736093317 7860949547 7388655387 7880947856 6389318812 7081865829 9918100665
Whatsapp us : 9721026382 9717413295 9170509670 9170509671 9670365889 8736093317 7860949547 7388655387 7880947856 6389318812 7081865829 9918100665

पूर्वी/पूर्वोत्तर क्षेत्र	
चिरांद (बिहार)	हिरण के सींगों से बने उपकरण प्राप्त हुए हैं।
कुचाई (उड़ीसा)	घास-फूस की झोपड़ी-कृषि के साक्ष्य-नवपाषाणिक संस्कृति के साक्ष्य-कृषि/ पशुपालन का विकास हुआ है।
दाओजेलो हैंडिंग (आसाम)	कृषि/पशुपालन का विकास हुआ है।

पुरापाषाण कालः- Hunting and food gathering agriculture was not known to paleolithic people.

- नीलगाय, जिराफ, कस्तूरी मृग, भैंस चिंकारा, गाय सुअर, ऊंट, घोड़ा दरियाई घोड़ा के साक्ष्य मिले है।
- निम्न पुरापाषाण काल से अग्नि का आविष्कार हुआ, परंतु वे उपयोग से परिचित नहीं थे।
- क्वार्टाजाइट, लैटराइट पत्थर का प्रयोग होता था।

मध्य पाषाण युगः- Hunting and food gathering was continued and agricultre was not-known till now.

- गाय, भैंस, बकरा, भैंसा, हिरण आदि के साक्ष्य मिलते है।
- मांस भूनकर खाना शुरू हुआ।
- बस्तियों की शुरूआत हुयी।
- मृत्युपर्यन्त जीवन की शुरूआत हुयी।

नवपाषाण युग(Neolithic Age):

- कृषि एवं पशुपालन का प्रारंभ हुआ।
- मृदभाण्ड परंपरा जारी रही, धातुओं का प्रारंभ हुआ।
- हड्डियों एवं प्रस्तर के हथियारों का प्रयोग हुआ।
- मरणोपरांत जीवन में विश्वास का विकास हुआ।
- विभिन्न प्रकार की समाधियां मिलती है।
- अग्नि का व्यापक प्रयोग शुरू हुआ।
- डोगी वाली नाव के साक्ष्य मिले है।

नव पाषाण युगीन समाधियांः-

सिस्ट समाधिः- आयताकार खाई बनाकर चारों ओर पाषाण से संदुक की आकषति बनाकर मष्तक शरीर की अस्थियां रखी रहती थी। अस्थियों के साथ औजार, आभूषण रखे रहते थे। इस प्रकार की समाधि कर्नाटक में लोकप्रिय थी।

पिट सरकिलः- वृत्ताकार समाधि, ग्रेनाइट पत्थरों से बनी रहती थीं समाधि के साथ आभूषण, औजार रखे थें। इस प्रकार की समाधि कर्नाटक में लोकप्रिय थी।

कैन सरकिलः- इस समाधि में भस्म पात्र रखा जाता था मुख्यतः तमिलनाडु में प्रचलित थी।

ताम्र पाषाण सांस्कृतियां (Chalcholithic Culture) नवपाषाणिक संस्कृति के परिवर्ती/ संलग्न क्षेत्रों में ताम्र पाषाणिक संस्कृति का विकास हुआ, आधुनिक भारतीय ग्रामीण समाज का विकास इसी चरण मे हुआ, धार्मिक विश्वास, पारस्परिक आर्थिक क्रियाकलाप का प्रारम्भ हुआ। घरों में नरकुल, सरपत, घांस फूस के वृत्ताकार झोपड़ी के साक्ष्य हैं।

Log in. targetwithalok.in for
General Studies and Current Affairs Notes

ताम्रपाषाण संस्कृतियाँ	
अहाड़ संस्कृति/ ताम्बवती (1700 BC- 1500 BC)अहाड़ गिलुंद	यहां काले रंग के मध्दभाण्ड थे जिस पर सफेद धारियां थी गिलुंद से प्रस्तर उद्योग
कायथा संस्कृति (2000 BC- 1800 BC)	पयाथा से कताई, बुनाई, सोनारी के साक्ष्य मिलते है।
मालवा संस्कृति (1500 BC- 2000 BC)मालवा एरण	मिट्टी का वृषभ मिलता है।
सावलदा संस्कृति(2300 BC- 2000 BC)	
जोर्वे संस्कृति (1400 BC- 700 BC) जोर्वे नेवासा, दायमावाद इनाम गांव	जोर्वे से पांच कमरों वाला मकान मिला है,
	दाययावाद, इनाम गांव से नगरीकरण के साक्ष्य प्राप्त होते है, इनाम गांव से मातृदेवी की मूर्ति मिली है।
प्रभास संस्कृति (1800 BC- 1200 BC)	ताम्र पाषाण कालीन उपकरण मिले है।
रंगपुर संस्कृति (1500 BC- 1200 BC)	ताम्र पाषाण कालीन उपकरण मिले है।

TARGET with Alok